पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-४३ सोमवार, १५ जून २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

बोतल में उतारा शिवराज को

शिवराज सिंह

कमलनाथ

भाजपाईयों को पैजामे के अंदर रखने में मास्टर माने जाने वाले कमल नाथ ने सूबे के निजाम शिवराज सिंह को भी शीशे में उतारने की कवायद आरंभ कर दी है। मुख्यमंत्री द्वारा मध्य प्रदेश भवन में आयोजित सांसद भोज में पधारे मंत्रियों में ज्योतिरादित्य सिंधिया की कमी अवश्य खली किन्तु इसमें कमल नाथ का जलजला अलग ही दिखा। घूम घूम कर सांसदों की मिजाज पुरसी करने वाले कमल नाथ ने सभी के सामने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पानी पानी कर दिया। बार बार केंद्र की उपेक्षा का आरोप लगाने वाले शिवराज की ओर मुखातिब कमल नाथ ने कहा, ''मुख्यमंत्री जी, अब मैं मध्य प्रदेश की सड़कों के उन्नयन का काम इतनी तेजी से करूंगा कि आप पर आरोप लगने लगेंगे कि आप अन्य राज्यों की तुलना में ज्यादा पैसा खींचकर ले गए है।''

फर्ज की बानगी

इंदौर में चोर-पुलिस की लुकाछिपी के कारण अब लोगों ने अपनी रक्षा की जिम्मेदारी खुद ही उठा ली है। बच्चों और युवाओं की फौज इन दिनों इसी काम में जुटी है। कोई एटीएम चोर को पकड़ रहा है तो कोई मुंह-अंधेरे भगवान का नाम लेने के बजाय ताले तोड़ने वाले लोगों को पकड़ रहा है। दरअसल राजनीति के गलियारों से चंद सफेदपोशों को निकाल बाहर करने के बाद अब लोग अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी खुद ही उठाना ठीक समझ रहे हैं। खाकीवर्दी अपने फर्ज को अंजाम नहीं दे पा रही है तो ऐसे में

उत्तम झांवर

लोगों ने ही अपने मन में खाकी धारण कर ली है। हर समस्या का हल अब केवल जनसहयोग ही दिखाई पड़ रहा है। कई मोहल्लों में लोगों ने मिलजुल कर सर्विसलेन बनवाई हैं। इसी तरह वाटर हार्वेस्टिंग को लेकर भी अब लोग काम कर रहे हैं। रूठे मानसून को मनाने के लिए कुछ नए पौधे लगाए जा रहे हैं। हर एक दिन इंतजार का कुछ ऐसे ही खत्म हो रहा है। शायरों की माने तो गोया अबके आओ तो ऐसे की बस जाओ नैनों में। इंतजार की तो तासीर ही है कभी खत्म ना होना। भारतीय टीमें भी कुछ ऐसे ही इंतजार करवा रही हैं। स्कॉटलैंड हो या वेस्टइंडीज हार का एक तमगा मुंह पर मढ़ चुका है। देश में रहने वाले सटोरिये भी अब इस बात का सट्टा खेलते हैं कि कितने विकेट बचा पाएगें हम। वे दिन दूर नहीं कि आने वाले समय में गली क्रिकेट के एम्पायर भारतीय टीम को चयन करने का जिम्मा उठा लें। आने वाला समय लिखेगा बदलाव की खातिर फर्ज की बानगी।

चल पड़ी राहुल ब्रिगेड

(नई दिल्ली ब्यूरो)

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली भारी सफलता ने राहुल ब्रिगेड के भाव बढ़ा दिये हैं. मनमोहनसिंह के 80 सदस्यी मंत्रिमंडल को लेकर कांग्रेस संगठन तक में राहुल ब्रिगेड का बोलबाला है. भविष्य में जहां कहीं भी फेरबदल होगा उसमें राहुल ब्रिगेड का दबदबा कायम रहेगा, अभी लोग राहुल गांधी को भावी प्रधानमंत्री बनाये जाने के पक्ष में आवाजें लगा रहे हैं हो सकता है. सीताराम केसरी की तरह मनमोहनसिंह को स्वास्थ्य कारणों से कुर्सी से उतारकर राहुल की ताजपोशी की जमीन तैयार कर दी जाए तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. यह भले जल्दबाजी हो लेकिन कांग्रेस में इस प्रहसन की प्रस्तावना लिखी जाने लगी है.

कांग्रेस की असल बागडौर युवराज राहुल गांधी के हाथों में आ गई है. टिकट वितरण में उन्होंने 146 युवाओं को टिकट दिलाए उनमें 73 से ज्यादा में सफलता के झंडे गाड़े और अब ये ही राहुल ब्रिगेड के वाहक बने हुए है. इनमें से 20 से ज्यादा मनमोहन मंत्रिमंडल में स्थान पा गये हैं. सचिन पायलट से लेकर अरूण यादव दिपेन्द्र हुड्डा से लेकर जतिन प्रसाद तक सभी राहुल ब्रिगेड के सदस्य हैं जो युवा मंत्री पद पाने से वंचित रह गये हैं वे संगठन के फेरबदल में जगह पा जायेंगे यह निश्चित है. याने अपने वाले दिनों में राज्यों से लेकर एआईसीसी और केन्द्र सरकार तक सभी दूर राहुल ब्रिगेड का बोलबाला होगा. तब जिस तरह सीताराम केसरी को बूढ़ा और बीमार अध्यक्ष बताकर कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटाया गया और सोनिया की ताजपोशी की गई उसी तरह मनमोहन से भी इस्तीफा दिलाकर राहुल गांधी की ताजपोशी की जाएगी या फिर 2014 में तो राहुल को प्रधानमंत्री के रूप में ही पेश कर चुनाव लड़ा जाएगा.

यह सही है कि राहुल गांधी के चेहरे और रणनीति ने चुनाव में कांग्रेस की जीत का करिश्मा कर किया है. लेकिन इस जीत में मनमोहनसिंह सरकार की कर्ज-माफी और अन्य योजनाओं का भी कम महत्व नहीं है. फिर भी कांग्रेस का छोटे से लेकर बड़ा हर नेता राहुल-सोनिया के गुणगान में जुट गया है क्योंकि वह जानता है कि कांग्रेस में वहीं होता है जो 10, जनपथ चाहता है राहुल की महिमा मंडन के लिये राहुल ब्रिगेड तो निकल पड़ी है फिर एक अर्जुन या प्रणव की क्या मजाल की ब्रिगेड की इस बढ़ती गाड़ी को रोक दें.

अजीत जोगी को निबटाने की साजिश

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी के विरोधी उन्हें सक्रिय राजनीति से दरकिनार करवा देने की साजिश के तहत कोशिश कर रहे हैं कि उन्हें झारखंड का राज्यपाल बना दिया जाये। साढ़े चार साल बाद होने वाले छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव से जोगी को दूर कर देने के लिए विरोधियों द्वारा अभी से रणनीति बनाई जा रही है और ऐसी खबरें गर्म की जा रही है। कि आलाकमान ने जोगी को झारखंड का राज्यपाल बनाये जाने का मन बना लिया है। वह भी बेजोड़ बताई जा रही है कि झारखंड आदिवासी बहुल राज्य है, वहां जल्द ही चुनाव होना है, जोगी कांग्रेस का आदिवासी चेहरा है। उन्हें वहां का राज्यपाल बनाये जाने से आदिवासी वोट बैंक पर अच्छा असर पड़ेगा। मतलब यह कि आदिवासियों को रिझाने के बहाने जोगी को निबटाने की तमन्ना है। लेकिन जोगी जैसे अनुभवी राजनेता को पता है कि यह उन्हें छत्तीसगढ़ से दूर करने का सियासी षड्यंत्र है, इसलिए उन्होंने इससे बचने के उपाय कर लिये हैं। दिलचस्प बात यह है कि छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता विद्याचरण शुक्ल राज्य गठन के बाद से हर चुनाव में कांग्रेस की हार के लिए उप सरकार की विफलता को जिम्मेदार बता रहे हैं कि कांग्रेस का परंपरागत आदिवासी वोटर कांग्रेस से दूर क्यों हो गया।

शेष अंतिम पेज पर .....

भाजपा के भीतर

उत्तराधिकार की लड़ाई

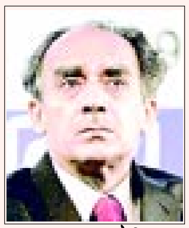

अरुण शौरी

अरुण जेटली

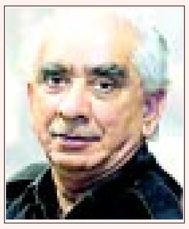

जसवंतसिंह

वैंकया नायडू

मुरली मनोहर जोशी

देश का नंबर दो राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी में भीतर ही भीतर उत्तराधिकार की लड़ाई तेज होती जा रही है. पीएम इन वेटिंग लालकृष्ण आडवाणी को अब पार्टी के भीतर ही कोई पीएम स्टेंडिंग नहीं मान रहा. लिहाजा आने वाला वक्त पीएम के भावी दावेदारों के लिए सुनहरा अवसर होगा.

इस लिहाज से भाजपा के भीतर अंदरूनी कलह अब ऊपर आती दिखाई दे रही है. जिस आलोचना को मुरली मनोहर जोशी ने शुरू किया था, वह बाद में बढ़कर राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष के लिए अरूण जेटली और जसवंतसिंह की महत्वाकांक्षा के चलते कलह में बदल गई.

ऐसा नहीं है कि सुधींद्र कुलकर्णी के लेखों से कोई लड़ाई का बहाना बना हो लेकिन जो भी हो आज भाजपा के भीतर का दूसरी पंक्ति का हर नेता अपने को लीडर मानने लगा है. जिससे आरोप-प्रत्यारोप का वह दौर उसमें शुरू हो गया जिससे नेताओं में मिजाज साफ नजर आ रहे हैं. जसवंतसिंह के पत्र की प्रतिलिपि मीडिया में आने की वजह भी भाजपा की भीतरी नेतागिरी है.

भाजपा के जिन अग्रिम पंक्ति के नेताओं की अपनी-अपनी तूती अपने-अपने राग में शुरू हो गई है, उनमें अरुण शौरी, अरुण जेटली, जसवंतसिंह, वैंकया नायडू, राजीव प्रताप रूड़ी, कलराज मिश्र, मुरली मनोहर जोशी, प्यारेलाल खंडेलवाल मप्र सरकार के एक मंत्री और अन्य शामिल हैं. इस स्थिति में भाजपा गुटों में विभक्त नजर आ रही है और आरएसएस भी अपने को बचा कर बयान देने में लगा है. पार्टी अध्यक्ष राजनाथसिंह सबकी सुनने में लगे हैं पर अपने लोगों से अन्यों को कड़ी और कड़वी बातें भी सुनवाने में लगे हुए नजर आते हैं.

जाहिर है लालकृष्ण आडवाणी से लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष रहते हुए भी उनके उत्तराधिकार की लड़ाई तेज हो गई है.यह इसलिए भी आश्चर्यजनक है कि भाजपा ने हाल ही में लोकसभा चुनाव में करारी मात खाई है. वह इस हार से अभी संभली भी नहीं है कि इसके भीतर की आग तेज होने जा रही है.

हालांकि लोकसभा चुनाव में स्टार प्रचारक रहे नरेंद्र मोदी जिस वक्त चुप हैं, उन पर आरोप है कि वे चुनाव प्रचार के चलते प्रधानमंत्री पद के लिए अपना नाम उछालने के काम पर रहे हैं. इसका खामियाजा पार्टी को भुगतना पड़ा था. अब वे भी निशाने पर हैं और तेज तर्रार वरुण गांधी को बढ़ावा देने वाले भी. देखना है भाजपा अपनी कलह से कैसे उभरती है.